विद्यापति-सूक्ति-तरंगिणी

संकलयिता
श्रीचन्द्रनाथमिश्र, 'अमर'

प्रकाशक
विद्यापतिगोष्ठी,
लहेरियासराय, दरभंगा ।

Scanned by CamScanner

विद्यापति-सूक्ति-तरंगिणी

[अभिनव - जयदेव, मैथिल-कोकिल, महाकवि
विद्यापतिठाकुर-रचित सूक्ति-पद]

संकलयिता
श्रीचन्द्रनाथमिश्र, 'अमर'
मुख्य-मैथिली-शिक्षक
एम्० एल्० एकेडमी, (उच्चतर माध्यमिक)
लहेरियासराय, दरभंगा।

प्रकाशक
विद्यापतिगोष्ठी,
लहेरियासराय, दरभङ्गा।

प्रथम संस्करण–१९७०] [मूल्य–४० पाइ मात्र

Scanned by CamScanner

[टिप्पणीक सर्वाधिकार सुरक्षित]

मुद्रक :—
श्री कामेश्वर झा
मैनेजर
जिला पर्षद प्रेस, दरभंगा।

Scanned by CamScanner

समर्पण

महाकवि विद्यापतिक जन्म-भूमि बिस्फीक उद्धारहेतु चिन्ता
कयनिहार, महाकविक काव्य-कलापर अनन्य निष्ठा
रखनिहार, मातृभाषाक महिमाकेँ सर्वांशतः
बुझनिहार, मैथिलीक माधुर्य पर मुग्ध
रहनिहार, अपन सहृदयता सँ
कलाकारक हृदय केँ
जितनिहार

बिहार सरकारक शिक्षा - आयुक्त

श्रीयुत नागेश्वरप्रसादसिंहजी, आइ० ए० एस०

क

कर - कमलमे

सादर समर्पित ई लघु उपहार

—श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

Scanned by CamScanner

प्राक्कथन

अभिनव - जयदेव, कवि-कोकिल, महाकवि विद्यापति सँ मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन एहि रूपेँ अविच्छेद्य रहल अछि जेना वैदिक मन्त्रसँ, किन्तु जहिना-जहिना प्रगतिशीलताक प्रभाव बढ़ल जा रहल अछि, नगरक सम्पर्कमे प्रगाढ़ता आयल जा रहल अछि, सिनेमा, रेडियो, लाउड - स्पीकरपर ग्रामोफोनक रेकार्डक प्रयोग बढ़ल जा रहल अछि, तहिना-तहिना विद्यापतिओक पद हमरा सभक जीवनसँ दूर भेल जा रहल अछि ।

यद्यपि विद्यापति-पदावली अनेक आकार ओ अनेक प्रकारमे विभिन्न ठामसँ प्रकाशित भऽ चुकल अछि जाहिमे सर्वप्रथम स्मरणीय थिकाह स्व० नगेन्द्रनाथगुप्त जे बंगीय साहित्य परिषद्सँ बंगला अक्षरमे प्रथम संस्करण 'विद्यापतिर पदावली' सम्पादित कऽ प्रकाशित कयलनि । रामवृक्ष बेनीपुरी ओ स्व० कुमार गङ्गानन्दसिंहजीक संयुक्त सम्पादकत्वमे पुस्तकभण्डार, लहेरियासरायसँ तथा स्व० खगेन्द्रनाथमित्र तथा विमानविहारीमजुमदार महोदय द्वारा

Scanned by CamScanner

वृहत् संस्करण देवाक्षर ओ बंगाक्षरमे सम्पादित भऽ प्रकाशित भेल जे बहुचर्चित अछि, किन्तु एक एहन संस्करण परम आवश्यक छल जे कोमलमति किशोर बालकक कंठमे घोरल जा सकय।

प्रस्तुत संस्करण ओही अभावकेँ दृष्टि-पथपर राखि संकलित कयल गेल अछि। ई निर्विवाद सत्य अछि जे विद्यापतिक नाम पर बहुतो पद प्रक्षिप्त भऽ गेल अछि, जकर अन्वेषणमे अनुसन्धाता लोकनि लागल छथि। तथापि जाहि पदकेँ सभ संकलयिता विद्यापतिक नाम पर स्वीकार कऽ चुकल छथि ताही पद सभमे सँ किछु एहिमे संकलित कयल गेल अछि। हँऽ किछु पद एहनो अछि जे अन्यत्र प्रकाशमे नहि आयल हो। यद्यपि एहिमे संकलित पद सभ जनकण्ठे सँ संकलित कयल गेल अछि, किन्तु पदावलीक अनेक संस्करण मे एहिमे सँ अधिकतर पद संकलित भेटल अछि।

यदि ई संकलन उपयुक्त बूझल गेल आ विशेषतः प्राथमिक विद्यालयक शिक्षक लोकनि एहि दिस अभिरुचि देखौलनि तँ भविष्यमे एहि प्रकारक आरो प्रयास कयल जा सकत।

यद्यपि विद्यापति तद्भव शब्दक प्रयोग कयने छथि, किन्तु कोमलमति छात्रक माथमे तद्भव शब्द देखि तत्समक

प्रसंग भ्रम नहि होइनि, अतः तत्समक प्रयोग जानि-बूझि कऽ कयल गेल अछि— यथा–शवासन, शरण, चरण, शोभित आदि-आदि ।

एहि संकलनक प्रेरणा-स्रोत दरभङ्गा जिलाक शिक्षा-पदाधिकारी श्रीमान् नन्दजीसिंहक प्रति हम आभार प्रगट करैत छियनि जे अपन अदम्य उत्साहक फलस्वरूप हमरा बजबाय एहि प्रकारक संकलन करबाक भार देलनि ।

विद्यापतिक सहस्रावधि पद सभमेसँ शृंगार-हीन पद सभकेँ बाछि कऽ बाहर करब समय-साध्य छल, किन्तु समयक अल्पता छल । एहि हेतु चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयक मैथिली विभागक यशस्वी प्राध्यापक आयुष्मान् श्री रामदेवझासँ बड़ सहायता भेटल तदर्थ आभार प्रदर्शित करैत हम एकर मुद्रक पं० श्रीकामेश्वरझाक प्रति आभार प्रगट करब सेहो आवश्यक बुझैत छी ।

अत्यन्त शीघ्रतामे एकर प्रकाशन करऽ पड़ल तदर्थ भऽ सकैत अछि, अनेक त्रुटि भऽ गेल हो । एहि हेतु क्षमा याचनाक अतिरिक्त दोसर उपाये कोन ।

अन्तमे हम आशा करब जे एहि संग्रहसँ बालक लोकनि लाभान्वित होयताह ।

विद्यापति स्मृति पर्व, १९७०
बिस्फी ।

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'
सचिव, विद्यापति-गोष्ठी,
लहेरियासराय, दरभंगा ।

Scanned by CamScanner

पदक अक्षरानुक्रम

		पृ० सं०
१.	अभिनव पल्लव बैसक देल	४४
२.	आदि भवानि विनय तुअ पाय	१०
३.	आइ तँ सुनिअ उमा	३१
४.	आजु नाथ एक व्रत	३८
५.	उगना रे मोर कतय	३३
६.	एहन उमत वर	२३
७.	एहि विधि अयला विआहन	२५
८.	कखन हरब दुख मोर	१६
९.	कमल सुखायल	४५
१०.	किअ किअ करिअ निदान	४२
११.	कोन वन बसथि महेश	३४
१२.	गौरी औरी ककरा पर करती	२६
१३.	गौरा तोर अङ्गना	३०
१४.	जय-जय भैरवि	९
१५.	जप तप एते हम	२८
१६.	जखन देखल हर हो	२७
१७.	जोगिया एक हम	२१
१८.	जोगिया हमर जगत सुखदायक	३७
१९.	तोहें प्रभु सुरसरि धार रे	१३
२०.	तोहें प्रभु त्रिभुवन नाथे	१७

२१. तोहँ जलधर ४६
२२. दिवस मन्द भल ४३
२३. दुल्लहि तोहर कतए छथि माय ४८
२४. पाहुन आयल भवानी ३५
२५. बड़ सुखसार पाओल तुअ तीरे ११
२६. बेरि-बेरि अरे शिव ४९
२७. भल हरि भल हर १५
२८ भलमाँटि जोहि कय १८
२९. मधुपुर गेल भगवान रे ४०
३० माधव कत तोर करब १४
३१. वर बौराह उमा केर २२
३२. विकट जटाचय ३६
३३. श्रवण सुनिय तुअ नाम रे ३९
३४. शिव हे सेबय अयजहुँ १९
३५. सपन देखल हम ४७
३६. सुजन सिनेह कतहु नहि जाय ४१
३७ सुनिऐन्हि हर बड़ सुन्दर २०
३८. सुरसरि सेवि मोरा १२
३९. हम नहि आजु रहब २४
४०. हमसौँ रुसल महेशे ३२
४१. हे मनाइनि देखह जमाय २९

—:००:—

कविपति विद्यापति मतिमाने।
जाक गीत जग चित्त चोराओल
गोविन्द गौरि सरस रस गाने॥

—गोविन्द दास

Scanned by CamScanner

जयजय भैरवि असुर भयाउनि
पशुपति भामिनि माया।
सहज सुमति वर दिअओ गोसाउनि
अनुगत गति तुअ पाया॥
वासर रैनि शवासन शोभित
चरण चन्द्रमणि चूड़ा।
कतओक दैत्य मारि मुह मेललि
कतओ उगिलि कैल कूड़ा॥
सामर वरन नयन अनुरंजित
जलद योग फुल कोका।
कट-कट विकट ओठ पुट पाँड़रि
लिधुर फेन उठ फोका॥
घन-घन घनय घुघुरु कत बाजय
हन-हन कर तुअ काता।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक
पुत्र बिसरु जनि माता॥

भयाउनि—भय देनिहारि। पशुपति—महादेव। भामिनि—पत्नी। गोसाउनि—कुल देवी। शवासन—मुर्दाक आसन। चूड़ा—मस्तक। मेललि—गीड़ि लेल। कूड़ा—कुड़ूर। अनुरंजित—लाल। लिधुर—शोणित। जलद—मेघ। फुल कोका—कुमुदक फूल। ओठ पुट—दूनू ठोर। घनय—मेघ जकाँ गरजय। काता—खड्ग।

[२]

आदि भवानि विनय तुअ पाय।
तुअ सुमिरैत दुरित दुर जाय॥
　　सिंह चढ़ल देवि लेल परवेश।
　　बघछल पहिरन योगिनि वेश॥
वाम लेल खपर दहिन लेल काति।
असुरकेँ वधय चललि निशि राति॥
　　मारल असुर भक्त प्रतिपाल।
　　बिछि बिछि गाँथल मुण्डक माल॥
तोहि भल छाज देवि मुण्डहार।
नूपुर शब्द उठय झनकार॥
　　भनइ विद्यापति काली-केलि।
　　सदा रहू मैया दाहिनि भेलि॥

दुरित—पाप। बघछल—बघछाला। छाज—शोभय। काली-केलि—कालीक खेल। भनइ—कहैत छथि।

Scanned by CamScanner

[३]

कत सुख सार पाओल तुअ तीरे।
छाड़इत निकट नयन बह नीरे॥
कर जोड़ि विनमओं विमल तरंगे।
पुनु दरसन होय पुनमति गंगे॥
एक अपराध छमव मोर जानि।
परसल माय पाय तुअ पानि॥
कि करव जप-तप-योग-धेयाने।
जनम कृतारथ एकहि सनाने॥
भनहि विद्यापति समदओं तोहि।
अन्त काल जनु बिसरह मोहि॥

तीरे—कछेड़, किनार। छाड़इत—छोड़इत। विनमओं—प्रार्थना करैत छी। पुनमति—पुण्य देनिहारि। छमब—क्षमा करब। पाय—पैर, चरण। सनाने—नहयलासँ। समदओं—समाद कहैत छी। अन्तकाल—मरबाक काल।

[स्मरणीय थिक जे महाकविक मृत्युकालमें विद्यापति नगर लग आबिकऽ गंगा हुनका दर्शन देने छलथिन। एहि प्रसंग में श्रीउपेन्द्रनाथ झा व्यास रचित 'विद्यापतिक मृत्यु' शीर्षक कविता पठनीय]।

[४]

सुरसरि सेवि मोरा किछुओ ने भेल।
पुनमति गाङ भगीरथ हरि लेल॥
जखन महादेव गंगा कैल दाने।
छिन भेल जटा मलिन भेल चाने॥
उठबह बनिआँ तोँ हाट बजारे।
एहि पथेँ अबै छथि सुरसरि धारे॥
छोट मोट भगिरथ छितनी कपारे।
से कोना लओताह सुरसरि धारे॥
विद्यापति भन विमल तरंगे।
अन्त शरण देब पुनमति गंगे।

सुरसरि—गंगा। मोर—हमरा। छिन—फाटल। पथेँ—बाटेँ। लओताह—अनताह।

[५]

तोहें प्रभु सुरसरि धार रे।
पतितक करिक उधार रे॥
दुर सँ देखल गाङ रे।
पाप रहल नहि आङ रे॥
सुरसरि सेवल जानि रे।
एहन परसमनि पानि रे॥
कवि विद्यापति भान रे।
सुरसरि गुनक निधान रे॥

पतितक—पापीक। दुरसँ—फराकेसँ। आङ्ग—अंग, शरीर। गाङ—गंगा। परसमनि—स्पर्शमणि, एक प्रकारक मणि जकर स्पर्श सँ धातु मात्र सोन भऽ जाइत छैक। भान—कहैत छथि।

Scanned by CamScanner

[६]

माधव ! कत तोर करब बड़ाई ।
उपमा तोहर कहब ककरा हम
कहितहुँ अधिक लजाई ॥
जौँ श्रीखण्ड सौरभ अति दुरलभ
तौँ पुनि काठ कठोर ।
जौँ जगदीश निसाकर तौँ पुनि
एकहि पच्छ इजोर ॥
मनि समान औरो नहि दोसर
तनिकर पाथर नामे ।
कनक कदलि छोट लज्जित भय रह
की कहु ठामहि ठामे ॥
तोहर सरिस एक तोहेँ माधव !
मन होइछ अनुमाने ।
सज्जन जनसँ नेह कठिन थिक
कवि विद्यापति भाने ॥

कत—कतेक । सौरभ -सुगन्ध । निसाकर—चन्द्रमा पच्छ—पच्छ । इजोर—इजोड़िया । कदलि—कइरी—केराकथम्भ । ठामहि ठामे—ठमकल । सरिस—सदृश, समान । तोहेँ—अहाँ ।

[७]

भल हरि, भलहर, भल तुग्र कला ।
खन पितवसन, खनहि बघछला ॥
खन पंचानन, खन भुज चारि ।
खन शंकर, खन देव मुरारि ॥
खन भिखि माङ्गिग्र डमरू बजाये ।
खन गोकुल भय चरविग्र गाय ॥
खनहिं भसम भरु काँख बोकान ।
खन गोविन्द भय लिग्र महादान ।
एक शरीर लेल दुइ वास ।
खन बैकुण्ठ खनहि कैलास ॥
भनहि विद्यापति अपुरुब बानि ।
ओ नारायन ओ सूलपानि ॥

भल-उत्तम, नीक,। पितवसन-पीताम्बर। पंचानन-महादेव। भुजचारि—चतुर्भुज (विष्णु)। खन—तुरन्ते। बोकान—झोरी। महादान—वृन्दावन लीला। अपुरुब—अपूर्व। बानि—वाणी, बात। नारायन—विष्णु। सूलपानि—शूलपाणि; महादेव।

Scanned by CamScanner

[८]

कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ !
कखन हरब दुख मोर ।
दुखहि जनम लेल, दुखहि गमाओल ।
सुख सपनहुँ नहि भेल ।
हे भोलानाथ ! कखन हरब दुख मोर ॥
अच्छत चानन ओ गंगाजल ।
बेलपात तोहि देब हे भोलानाथ !
एहि भवसागर थाह कतहु नहिं ।
भैरव धरु कर आय हे भोलानाथ !
भनहि विद्यापति मोर शंकर गति
दिअ न अभयवर मोहि हे भोलानाथ ।
कखन हरब दुख मोर ॥

हरब—मेटायब । मोर—हमर । गमाओल—बितौलहुँ । अच्छत—अरबा चाउर पूजाक हेतु । भवसागर—संसाररूपी समुद्र । आय—आबिकऽ । मोहि—हमरा ।

[६]

तोहें प्रभु त्रिभुवन नाथे, हर हे !
हम निरदीस अनाथे ॥
करम धरम तपहीने, हर हे !
पड़लहुँ पाप अधीने ॥
बेड़ भासल मझधारे, हर हे !
भैरव धरु करुआरे ॥
सागर सम दुख भारे, हर हे !
अबहु करिअ प्रतिकारे ॥
कवि विद्यापति भाने, हर हे !
संकट करिअ तराने ॥

निरदीस—भुतिआयल, दिग् भ्रान्त। बेड़—कड़रिक थम्भ सँ जोड़ल नदी पार करबाक एक साधन, नाव। प्रतिकारे—उपाय। तराने—त्राण, उद्धार।

Scanned by CamScanner

[१०]

भल माटि जोहि कय आनलि वानी।
चललि अराधय शम्भु भवानी॥
आक धुथुर फुल दिअ मोहि जोही।
जगत जनमि डर छाड़ल मोही॥
जम किंकर मोर कि करत अंगे।
रह अपराधी बलिया संगे॥
जे सभ कयल हर सभ मोर दोसे।
से सभ कयल हर तोहरे भरोसे॥
भनहि विद्यापति शंकर सून।
अन्त काल मोहि बिसरह जनू॥

जोहि—ताकि। वानी—वाणी, सरस्वती। अराधय—आराधना करय, पूजा करय। जम-किकर—यमदूत। बलिया—बलबान।

Scanned by CamScanner

[११]

शिव हे सेबय अयलहुँ सुख लागी।
विषम नयन अनुखन वर आगी॥
बसहा पड़ायल आगे।
पैसि पताल नुकायल नागे॥
शशि उठि चलल अकाशे।
गौरि चललि गिरिराजक पासे॥
उचित बोलल नहि जाए।
उमत बुझाओब कओन उपाए॥
भनहि विद्यापति दासे।
गौरी शंकर पुराबथु आसे॥

लागी—हेतु। विषम नयन—तेसर आँखि। अनुखन—सतत। उमत—बताह।

Scanned by CamScanner

[१२]

सुनिऐन्हि हर बड़ सुन्दर।
देखिऐन्हि विभूति भुअंकर॥
सुनिऐन्हि हर औता रथ पर।
देखिऐन्हि बूढ़ बड़द पर॥
सुनिऐन्हि पाट पटम्बर।
देखिऐन्हि फाटल बघम्बर॥
सुनिऐन्हि गरा मोतिमाल लय।
देखिऐन्हि रुद्रक माल लय॥
भनहि विद्यापति गाओल।
गौरि उचित वर पाओल॥

भुअंकर—भयंकर। पाट पटम्बर—रेशमी पीताम्बर। रुद्रक माल—रुद्राक्ष माला।

Scanned by CamScanner

[१३]

जोगिया एक हम देखल गे माई।
अनहद रूप कहलो नहि जाई॥
पाँच वदन तिन नयन विशाला।
वसन विहून ओढ़न बघछाला॥
शिर बहु गाङ तिलक शोभ चन्दा।
देखि सरूप मेटल दुख दन्दा॥
जाहि जोगिया लय रहलि भवानी।
मन आनलि वर कोन गुन जानी॥
कुल नहि शील न तात महतारी।
वयस हिनक थिक जुग लछ चारी॥
भन विद्यापति सुनु ए मनाइनि।
एहो जोगिया थिक त्रिभुवन दानी॥

अनहद—अति विचित्र। वदन—मुँह। वसन—वस्त्र। विहून—विहीन। दुखदन्द—कष्ट। तात—पिता। महतारी—माय। जुग लछ चारी—चारि लाख युग।

[१४]

वर बौराह उमाकेर, सोचथि नारि निहारि।
फनि मनि मौलि विराजित
सिर बहु सुरसरि धार।
भाल विशाल सुधाकर
कर त्रिशूल त्रिपुरारि॥
वाहन बसहा दिगम्बर
परिजन भूत बेताल।
आक धुथुर विख भोजन
विजया प्राण अधार॥
शिव शंकर वर ईश्वर
नाथ चरण चित लाय।
गिरिजा मनहि आनन्दित
कवि विद्यापति गाय॥

बौराह—भकतराह। निहारि—देखिकऽ। फनि—साप। मौलि—मस्तक। सुधाकर—चन्द्रमा। त्रिपुरारि—त्रिपुर नामक असुरकेँ नाश कयनिहार, महादेव। वाहन—सवारी। विख—विष, जहर। विजया—भाङ। गिरिजा—पार्वती।

Scanned by CamScanner

[१५]

एहन उमत वर लाओल हेमत ऋषि
देखि देखि लगइछ रंग।
एहन उमत वर घोड़बो ने चढ़इक
जाहि घोड़ रंग विरंग आगे माइ।
बाघक छालेँ बसहा पलानल
सापक लागल तंग।
डिमिक डिमिक हर डमरु बजावथि
खटर खटर करु अंग आगे माइ।
भकर भकर हर भाङ भकोसथि
पटर पटर करु गाल।
चाननसँ अनुराग न राखथि
भसम रमावथि भाल आगे माइ।
भूत पिशाच बहुत दल सिरिजल
सिरसँ बहि गेल गंग।
भनहि विद्यापति सुनु ए मनाइनि
थिकाह दिगम्बर भंग॥

उमत—भङ्गतराह, उन्मत्त। हेमत ऋषि—हिमालय। लगइछ रंग—तमासा लागि रहल अछि। घोड़बो—घोड़ा। पलानल—जीन कसल। तंग—डोरी, (तंग-तरहा)। भकोसथि—बिनु चिबौने गिड़ने जाथि। सिरिजल—सृष्टि कयल, बनाओल।

Scanned by CamScanner

[१६]

हम नहि आजु रहब एहि आङन
जौं बूढ़ होयत जमाय।
एक तँ बैरी भेल बीध विधाता
दोसर धिया केर बाप।
तेसर बैरी भेल नारद बाभन
जे बुढ़ आनल जमाय गे माइ।
पहिलुक बाजन डामरु फोड़ब
दोसर तोड़ब रुण्डमाल।
बड़द हाँकि बरिआत बैलायब
धिया लय जायब पड़ाय गे माइ।
धोती लोटा पोथी पतड़ा
सब किछु लेबनि छिनाय।
जौं किछु बजता नारद बाभन
दाढ़ी धय घिसियाय गे माइ।
भनहि विद्यापति सुनु हे मनाइनि
दृढ़ करु अपन गेयान।
शुभ - शुभ कय हर गौरी बिआहिय
गौरी हर एक समान।

बैरी—शत्रु। बुढ़—बूढ़, महादेव। रुण्डमाल—रुद्राक्ष माला।

Scanned by CamScanner

[१७]

एहि विधि अयला बिअाहन भोला
एहन बाउर जोगी
टपर टपर कय बसहा आयल
खटर खटर रुण्डमाल
भकर भकर शिव भाङ भकोसथि
डामरु करु उतफाल
ऐपन मेटल, पुरहर फोड़ल
बड़ कैल चौमुख दीप
धिया लय मनाइनि मन्दिर बैसलि
केओ जनु गाविअ गीत
भनहि विद्यापति सुनु ए मनाइनि
इहो थिका त्रिभुवन ईश

बाउर—बताह। उतफाल—घनघोर ध्वनि। बड़ कैल—मिझादेल।

Scanned by CamScanner

[१८]

गौरी औरी ककरा पर करती
बर भेल तपसी भिखारि
हेम शिखर पर बसथि एक घर
नहि छन्हि अपन परार
वारि कुमारी राजदुलारी
ऋषि केर प्रान अधार
से गौरी कोना विपति गमौती
के मुख करत दुलार
तेल फुलेल लय केस बन्हावथि
और ओडारथि आड
से गौरी कोना भसम रमौती
नित उठि कुटती भाङ
भनहि विद्यापति सुनिअ मनाइनि
इहो थिका त्रिभुवन नाथ
शुभ-शुभ कय श्री गौरी विंआहिअ
इहो वर लिखल ललाट

औरी—क्रोध। तपसी—तपस्वी। हेम शिखर—कैलास। अपनपरार—स्वजन समाज। वारि—बाला। गमौती—व्यतीत करतीह। ललाट—कपार, भाग्य।

Scanned by CamScanner

[१६]

जप तप एते हम किअ लागि कयलहुँ
कथिलय कयलि नित दान
हमर धिया केँ ई वर भेटल
आब न बचत परान
हरकेँ माय-बाप नहिं थिकथिन
ने छन्हि सोदर भाय
मोर धिआ जौं सासुर जैती
बैसति ककर लग जाय
घास छिलि अनती, बसहा चरौती
कुटती भाङ धुथूर
एको पल गौरा बैसहु ने पौती
रहती ठाढ़ि हजूर
भनहि विद्यापति सुनू ए मनाइनि
दृढ़ करु अपन गेआन
तीनि लोक केर एहो छथि ठाकुर
गौरा दाइ से जान

नित—नित्य, परान—प्राण, धिआ—बेटी, पल—क्षण, ठाढ़ि हजूर—आज्ञाकारिणी बनलि। गेआन—ज्ञान, ठाकुर—ईश्वर।

Scanned by CamScanner

[२०]

जखन देखल हर हो गुननिधी
पुरल सकल मनोरथ सब विधी
बसहा चढ़ल वर हो वुढ़ जती
कान कुंडल सोभ, गल गजमोती
बैसल महादेव बेदी चढ़ी
जटा छिरिआओल माओल भरी
विधिकरि विधि करु विधि करु
विधि न करह हर हो हठ धरु
विधिए करैत हर हो घुमि खसु
ससरि खसल फनि सिर गौरि हँसु
केओ नहि किछु कहथुन हिनकहू
पुरविल लिखल छला मोर पहू
कवि. विद्यापति गाओल
गौरि उचित वर पाओल

गुननिधि—गुणवान। सब विधी—सब प्रकारेँ। जती—यति, योगी। माओल—मौलि, मस्तक। विधिकरि—विधिकरी। हठ—जिद्द। फनि—साप। पुरविल—पहिलुक। पहु—पति।

[२१]

हे मनाइनि देखह जमाय
शिवक माथ फुटल जटा
आगे माइ ताहि उपर नाग घटा
जटा देल अँकुसी लगाय
आगे माइ ताहि उपर नाग घटा
झिकितहि सुरसरि गेलि बहराय
बेदी देल लवा छिड़िआय
आगे माइ ताहि उपर नाग घटा
भूखल वासुकि बिछि-बिछि खाय
बट्टा भरि घोरल कसाय
आगे माइ ताहि उपर नाग घटा
उमत महादेव भसम लगाय
भनहि विद्यापति गाओल आगे माइ
गौरि सहित बर कोबर जाय।

नाग घटा—सापक समूह। जटा देल अँकुसी लगाय—बिवाह कालक एक विधि। बेदी देल लवा छिड़िआय—भामरि देल। वासुकि—एक नागक नाम। कसाय—कसार।

Scanned by CamScanner

[२२]

गौरा तोर अङना
बड़ अजगुत देखल तोर अङना
एक दिस बाघ सिंघ करे हुलना
दोसर बड़द छह सेहो बौना
कार्तिक गनपति दुइ चेङना
एक चढ़य मोर, एक मूस लदना
पैंच उधार माङय गेलहुँ अङना
संपति मध देखल एक भाङ घोटना
खेती ने पथारी सिवकें गुजर कोना
मङनी केर आस छैन्हि सबही दिना
भनहि विद्यापति सुनु उगना
दारिद्र हरन करु धैल सरना

अजगुत—विचित्र। अङना—आङ्गन। हुलना—हुल हुल। बौना—भुट्ट। चेङ्गना—छौंड़ा। मोर-मयूर।

Scanned by CamScanner

[२३]

आइ तँ सुनिअ उमा भल परिपाटी
उमगि फिरय मूस झोरी मोर काटी
झोरी रे काटिअ मूस जटा काटि जीवे
सिरम बैसल सुरसरि जल पीवे
बेटा रे कातिक एक पोसल मजूरे
सेहो देखि गर मोर फनिपति झूरे
तोहें जे पोसलि गौरी सिंह बड़ मोटे
सेहो देखि डर मोर बसहा गोटे
भनहिं विद्यापति बाँसक सिंगा
तपोवन नाचथि धतिंगा तिंगा

परिपाटी—व्यवहार। उमगि—उमंग मे आबि। सिरम-सिरमा। मजूरे—मयूर। गर—गरदनि। फनिपति—नागराज। झूरे—भयभीत। गोटे—एक मात्र। सिंगा—घुतहू। धतिंगा तिंगा—एक प्रकारक नाच।

Scanned by CamScanner

[२४]

हम सौं रुसल महेशे
गौरि विकल मन करथि उदेसे
पुछिअ पथिक जन तोही
एहि पथ देखल कहुँ बूढ़ बटोही
अंगमे विभूति अनूपे
कतेक कहब हुनि जोगिक सरूपे
विद्यापति भन ताही
गौरी हर लय मेलि बताही

अनूपे—अनुपम। हुनि—हुनका। सरूपे—स्वरूप। ताही—हुनका।

Scanned by CamScanner

[२५]

उगना रे मोर कतय गेलाह
कतय गेला शिव किदहु भेलाह
भाङ नहि बटुआ रुसि बैसलाह
जोहि हेरि आनि देल हँसि उठलाह
जे मोरा कहताह उगना उदेस
तनिकहु देब कर कङना बेस
नन्दन वन मे भेटल महेश
गौरि मन हरखित मेटल कलेस
विद्यापति भन उगना सँ काज
नहि हितकर मोरा त्रिभुवन राज

उगना—विद्यापतिक चाकरक रूपमे शिवक नाम। कर—हाथ। बेस—नीक। कलेस—क्लेश। हरखित—हर्षित। हितकर—उपकारी।

[२६]

कोन वन वसथि महेस
केओ नहि कहथि उदेश
तपोवन वसथि महेस
भैरव कहथि उदेस
कान कुंडल हाथ गोला
ताहि वन बिहरथि भोला
भनहि विद्यापति गौरी
कथिलय होइ छिअ बौरी

बसथि—रहैत छथि। उदेस—पता। विहरथि—विचरण करैत छथि। होइछिअ—होइत छी। बौरी—बताहि।

Scanned by CamScanner

[२७]

पाहुन आयल भवानी ।
बाघ छाल बइसय दिअ आनी ॥
बसह चढल बुढ़ आबे ।
धुथुर गजाए भोजन हुनि भावे ॥
भसम विलेपित आंगे ।
जटा बसथि शिर सुरसरि गांगे ॥
हाड़माल फणिमाल शोभे ।
डमरु बजाब हर जुवतिक लोभे ।
विद्यापति कवि भाने ।
ओ नहि बुढ़वा जगत किसाने ॥

हुनि—हुनका । भसम—विभूति । विलेपित—लेपल ।
हाड़माल—मुण्डमाल । फणिमाल—सापक माला ।

Scanned by CamScanner

[२८]

विकट जटाचय किछु न लोक भय हे
उर फणिपति दिगवास ॥
कओन पथ मेटताह हे आगे माइ
जाइत उमत हमार ॥
त्रिपुर दहन करु, छारेँ छाल भरु हे
वसह चढ़ल वर बूढ़ ॥
तीनि नयन हर एक अनल भर हे
शिर सुरसरि जलधार ॥
भनइ विद्यापति गौरी विकल मति हे
ओहि उमताक उदेस ॥

जटाचय—जटाक समूह। उर—हृदय। दिगवास—दिशारूपी वस्त्र। दहन—डाहब। छारेँ—छाउरसँ। अनल—आगि। उदेस—पुछारि।

Scanned by CamScanner

[२६]

आगे माइ जोगिया हमर जगत सुख दायक
दुख ककरहु नहि देल
दुख ककरो नहि देल सदाशिव
दुख ककरो नहि देल ॥
एहि जोगिया कें भाङ भुलौलक
धुथुर खोआय धन लेल ।
आगे माइ कातिक गनपति दुइ छन्हि बालक
जगभरि के नहि जान ।
तनिका अभरन किछुओ न देलनि
रतिएक सोन नहि कान ॥
आगे माइ सोना रूपा अनका सब अभरन
अपना लय रुद्रक माल ।
अपना सुत लय किछुओ न जुड़इन
अनका लय जंजाल ॥
आगे माइ छनमे हेरथि कोटिधन बकसथि
ताहि देवा नहि भोर ।
भन विद्यापति सुनु हे मनाइनि
थिकाह दिगम्बर मोर ॥

अभरन—आभूषण। रतिएक—कनेक। बकसथि—देथि। भोर—बताह।

[३०]

आजु नाथ एक व्रत महासुख लागत हे।
तोहेँ शिव धरु नटवेश कि डमरू बजाबिअ हे॥
तोहेँ जे कहइ छह गौरा नाचय हमे कोना नाचब हे।
एक सोच मन होय चारि कोना बाँचब हे॥
अमिअ चुबिअ भूमि खसत बघम्बर जागत हे।
होयत बघम्बर बाघ बसहा धय खायत हे॥
शिर सौं ससरत साप दहो दिस जायत हे।
कार्त्तिक पोसल मयूर सेहो बिछि खायत हे॥
जटा सौं छिलकत गंग रंगभूमि पाटत हे।
होयत सहस मुख धार समेटलो ने जायत हे॥
मुंडमाल टुटि खसत मशानी जागत हे।
तोहेँ गौरा जयबह पड़ाय नाच के देखत हे॥
विद्यापति कवि गाओल गाबि सुनाओल हे।
राखल गौरीक मान शिव चारु बचाओल हे॥

नटवेश—नर्त्तकक रूप। अमिय—अमृत। रंगभूमि—नचबाक स्थान, मंच। सहसमुख—हजार मुँह। मशानी—भूत प्रेत।

Scanned by CamScanner

[३१]

श्रवण सुनिअ तुअ नाम रे।
सुयश बहुत सब ठाम रे॥
छिति कागत केर मान रे।
सागर करु मसिहान रे॥
सुरतरु कलम अनाय रे।
फनिपति लिखथि बनाय रे॥
तैयो ने अँटय तुअ गून रे।
लिखि नहि सकथि निपून रे॥
कवि विद्यापति भान रे।
सुपुरुष गुणक निधान रे॥

श्रवण—कान। छिति—पृथ्वी। सागर—समुद्र। मसिहान—मोसिआनी। सुरतरु—कल्पवृक्ष। फनिपति—शेषनाग। गून—गुण। निपून—निपुण। निधान—भंडार।

Scanned by CamScanner

[३२]

मधुपुर गेल भगवान रे।
हुनि बिनु त्यागब प्राण रे॥
मधु मिसरी पकमान रे।
खयनहि तित मिठ जान रे॥
हुनका के कह आन रे।
अपनहि सब किछु जान रे॥
कवि विद्यापति भान रे।
सुपुरुष गुणक निधान रे॥

मधुपुर—मथुरा। हुनि बिनु—हुनका बिनु। निधान—भंडार।

Scanned by CamScanner

[३३]

सुजन सिनेह कतहु नहि जाय।
कतहु देखल अछि उदधि सुखाय॥
करय चाहिअ दुर्जन मन भंग।
दाहे दुगुन होअ कंचन रंग॥
कतेक कुजन जन रचथि उपाय।
तइओ ने परसमणि मोने बिकाय॥
जइओ कलानिधि राहु गरास।
तइओ ने शशधर होथि उदास॥
भनहि विद्यापति सुजनक रीति।
बड़ जन तेजथि ने सुजन पिरीति॥

सुजन—नीकलोक। सिनेह—स्नेह, प्रेम। उदधि—समुद्र। दाहेँ—धिपौलासँ। कंचन—सोना। कुजन—अधलाह लोक। परसमणि—स्पर्शमणि। कलानिधि—चन्द्रमा। गरास—ग्रस्त करब। शशधर—चन्द्रमा। बड़जन—पैघलोक। पिरीति—प्रेम।

Scanned by CamScanner

[३४]

किअ किअ करिअ निदान माधव !
हमरा तुअ पर मान।
जाहि करिअ नव प्रीति माधव !
ताहि न करिअ दुइ रीति।
जाहि छुबिअ निज गात माधव !
ताहि न करिअ दुइ बात।
अबहु करिअ समधान माधव !
जाबत अछि किछु प्राण।
कवि विद्यापति भान माधव !
पुरुषक ई परमान।

किअ किअ—की की। निदान—उपाय। गात—शरीर। समधान—समाधान, उपाय। परमान—प्रमाण।

Scanned by CamScanner

[३५]

दिवस मन्द भल रहय न सब खन
विहि न दाहिन रह वाम लो।
सेहे पुरुष वर जेहे धैरज कर
सम्पद विपदक ठाम लो॥
माधव बुझल सबे अवधारि लो।
जस अपजस दुअओ चिरे थाकए
आओर दिवस दुइ चारि लो॥
अपन करम अपनहि भुँजिअ
विहिक चरित नहि बाध लो।
कायर पुरुष हृदय हारि मर
सुपुरुष सह अवसाद लो॥
तीनि भुवन मही अइसन दोसर नही
विद्यापति कवि भान लो।
राजा शिवसिंह रूपनराएन
लखिमा देवि रमान लो॥

दिवस—दिन। मन्द—अधलाह। भल—नीक। विहि—विधाता। दाहिन—अनुकूल। वाम—प्रतिकूल। सम्पद—सम्पत्ति। विपद—विपत्ति। जस—यश। अपजस—अयश। चिरे—बहुत दिन। थाकए—रहय। भुँजिय—भोग करी। विहिक चरित—विधाताक लिखल। बाध—बाधा। अवसाद—दुःख। अइसन—एहन। रमान—लक्ष्मी।

Scanned by CamScanner

[३६]

अभिनव पल्लव बैसक देल।
धवल कमल फुल पुरहर भेल॥
करु मकरन्द मन्दाकिनि पानि।
अरुण अशोक दीप दहु आनि॥
माइ हे आज दिवस पुनमन्त।
करिय चुमाओन राय वसन्त॥
सपुन सुधानिधि दधि भल भेल।
भमि भमि भमरि हँकारइ देल॥
केसु कुसुम सिंदुर सम भास।
केतकि धूलि विथुरल परवास॥
भनइ विद्यापति कवि कण्ठहार।
रस बुझ सिवसिंघ रस अवतार॥

अभिनव—नवीन। वैसक—आसन। धवल—उज्जर। मकरन्द—पराग। मन्दाकिनि—गंगा। अरुण—लाल। दहु—दैत अछि। पुनमन्त—पुण्यवान। राय—राजा। सपुन—सम्पूर्ण। सुधानिधि—चन्द्रमा। दधि—दही। भमि भमि—घूमि घूमि। हँकारइ—हँकार। केसु-पलाश। केतकि—केओड़ाक फूल। विथुरल—पसारल। परवास—पटोर।

Scanned by CamScanner

[३७]

कमल सुखायल भमर न आब।
पथिक पियासल पानि न पाब॥
दिन दिन सरोवर होइ अगारि।
अबहु न बरिषइ महो भरि वारि॥
यदि तोहें बरिषब समय उपेखि।
की फल पाओब दिवस दिप लेखि॥
भनइ विद्यापति असमय वानी।
मुरुछल जीबय चुरुएक पानी॥

सरोवर—पोखरि। अगारि—कम पानि वला। मही—पृथ्वी। वारि—पानि। उपेखि—उपेक्षा कऽ। दिवस दिप लेखि—दिनुक दीप जकाँ। मुरुछल—मूर्च्छित भेल।

Scanned by CamScanner

[३८]

तोहे जलधर सहजहि जलराज ।
हमे चातक जलविन्दुक काज ॥
जल दय जलद जीव मोर राख ।
देले सहस अवस हो लाख ॥
तनु देअ चाँद राहु कर पान ।
कबहु कला नहि होअ मलान ।
वैभव गेले रहए विवेक ।
तइसन पुरुष लाख थिक एक ॥
भनइ विद्यापति पावय से ।
दुइ मन मेल करावय जे ॥

जलधर—मेघ । जलराज—जलक राजा । जलद—मेघ । सहस—हजार । अवस—अवश्य । तनु—शरीर । वैभव—सम्पत्ति । विवेक—कर्त्तव्य अकर्त्तव्यक विचार ।

Scanned by CamScanner

[३६]

सपन देखल हम शिव सिंह भूप।
बतिस बरस पर सामर रूप॥
बहुत देखल गुरुजन प्राचीन।
आब भेलहुँ हम आयु विहीन॥
समटु समटु निअ लोचन नीर।
ककरहु काल न राखथि थीर॥
विद्यापति सुगतिक प्रस्ताव।
त्याग के करुणा रसक स्वभाव॥

सपन—स्वप्न, सपना। आयुविहीन—आयुर्दाक क्षीण। सुगति—सद्गति।

Scanned by CamScanner

[४०]

दुल्लहि तोहर कतए छथि माय ।
कहुन्ह एखन ओ आबथु नहाय ॥
वृथा बुझथु संसार विलास ।
छन छन नाना तरहक त्रास ॥
माय बाप जौं सद्गति पाब ।
सन्तति काँ अनुपम सुख आब ॥
कातिक धवल त्रयोदशि जान ।
विद्यापतिक आयु अवसान ॥

वृथा—व्यर्थ, मिथ्या । त्रास—भय । अवसान—अन्त ।

Scanned by CamScanner

[४१]

बेरि बेरि अरे शिव मो तोय बोलिअ
किरिष करिअ मन लाइ।
बिनु सरमे रहह भिखिए पए मांगिअ।
गुन गौरव दुर जाइ॥
निरधन जन बोलि सबे उपहासय
नहि आदर ,अनुकम्पा।
तोहे शिव पाओल आक धुथुर फुल
हरि पाओल फुल चम्पा॥
खटग काटि हर हर जे बँधावह
त्रिशुल तोड़िअ करु फारे।
बसहा धुरन्धर हर लय जोतिअ
पाटय सुरसरि धारे॥
भनइ विद्यापति सुनह महेसर
इ जानि कयल तुअ सेवा।
एतय जे वरु से वर होअल
ओतय जायब जनु देवा॥

मो—हम। तोय—अहाँ कें। किरिष—कृषि,खेती। सरमे—लाजें। खटग—खाटक पासि। महेसर—महेश्वर—महादेव। होअल—भेल। ओतय—परलोक मे।

Scanned by CamScanner

वालचन्द विज्जावइ भाषा
दुइ नइ लग्गइ दुज्जन हासा ।
ओ परमेसर हर सिर सोहइ
ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ ॥

Scanned by CamScanner